भीतर उतरने का उत्साह
राजी सेठ

भीतर उतरने का उत्सव

(कविता संग्रह)

राजी सेठ

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2024

© राजी सेठ

परिबोधन

भीतर उतरने का उत्सव

वह कौन था-

जो बाँह पकड़े

कविता की नदी पर छोड़ गया....

सम्भावना आगत के स्वागत की जिजीविषा है। उम्मीद के सरगम पर ही जीवन के गीत प्रस्फुटित होते हैं। सर्जना की यह पहली शर्त है। संरचना की यह ख्वाहिश है कि सम्भावना का दामन न छोड़ें, उसी में जीवन का सरगम है और जीवन कविता की काया है! जीवन.काया से जब काव्य प्रस्फुटित होकर पल्लवित होते हैं, प्रार्थना के गीत बजते हैं, कवि का यही निहितार्थ है। उसके जीवन के पल.छिन में खुशियों का आगार है उसकी काव्य- सर्जना!

तुम्हारे होने से

सम्भावना जगी रहती है

"...भीतर उतरने का उत्सव" कवयित्री राजी सेठ अपने प्रस्तुत काव्य- संग्रह में बड़े कशिश के साथ कह रही हैं, यह उनकी जीवन्तता है। काव्य की सर्जना का मतलब सर्जना के सम्पूर्ण आयाम का उद्गम! प्रतिबद्ध दिन की क्रमागत में लय-छन्द का कोई भी

वरद- क्षण उनकी रचनात्मकता से विरल नहीं हुआ। रचनात्मकता की प्राणऊर्जा रचनारत रहने के लिए उन्हें प्राणान्वित करती रही है-

प्राणान्वित हो उठती हैं

सभी स्मृतियाँ.सुधियाँ

रागान्वित सभी धुनें

× × ×

उसी उछाह से अर्पित हैं

यह अर्पण रचना कसाव को समृद्ध करता चलता है और सर्जना की पाजेब द्वार खोल देती है-

जो लय है मेरी अनुगता है मैंने

उसे ब्याहा है

जो छन्द है, आगत है, मेरे द्वार

पर आया है

जीवन दर्शन की उनकी भाषा काव्यभाषा को आह्वान करती हुई उसी स्मरण की छाँह में काव्य- सम्पोषी बनी है। आंतरिक लय के प्रेषण से भावप्रतीति की प्रतिबद्धता पुरजोर होती है, सम्वेदन यहाँ कुलाचें मारने लगती है, कविता की प्रसूती सहज उच्छवसित हो जाती है। राजी जी कहती भी हैं, "कविता विवरण से नहीं, सम्वेदन से लिखी जाती है।" सम्वेदन की ताप से अजीव भी जीवन्त हो जाता है-

काठ को कला कर देने की आस्था को

वंचित कर देगा वह-

ठूँठ से उगती हुई

जीवन के दर्शन की भाषा को!

काव्य की सर्जना में जब यह भाव हो- "तुम्हारे भीतर उतरने का उत्सव" तो काव्य के वैराग्य-मरू में भी रागिनियाँ उगने लगती हैं। और भी, कि यहाँ तो परोसने की प्रभुता में उर्वर बन बहने की बात है! प्रकृति और स्त्री दोनों की स्वमुक्ति ही संधान का पोषक है। बंधन में सुख है, पर उर्वरता के लिए बंधन यानि अपनी ही परिधि में परिवेशित प्रसन्नता-

मुझे मुक्त करे

अपनी तरह

मैदानों, तलहटियों, खेतों के बीच

उर्वरता बन बहने को

उत्सव की यह काव्यानुभूति राजी सेठ की काव्यभाषा ही कर सकती है। सदी की समझ में भी इच्छा के ओढ़न का सवाल कविताएँ कर रही हैं समय की नदी में बहते हुए। ऐसी समकालीन समझ कविताओं को स्वर देती हैं और कुछ कहने के लिए कालानुभूति से लैस करती हैं।

इतिहास अनवरत दौड़ता है युग संधियों में

फालतू करके फेंकता है शब्दों के छिलके

इन्हीं अभिप्रायों की सम्पुष्टि है- '...भीतर उतरने का उत्सव'!

-डॉ. डी. एन. प्रसाद

मेरे मन के मानसरोवर की

‘मानसी’ को

-यह भीतर का उत्सव…

असली काम तो अंतःप्रेरणाओं के सत्व को निर्दिष्ट की ओर ले जाना और संवेदनात्मक सघनताओं का नियमन करके उसे संप्रेषण- सुलभ बनाना है। यह सब कुछ रचना- मानस में निरायास होता है- चेतनागत रूप से। चेतना अविछिन्न होती है। साहित्य.विविधा में काव्य का प्रवेश तो अविछिन्न चेतना के लक्षण हैं।

-राजी सेठ

सूची

निःशब्द रात	11
ज्योतिगर्भित हीरक सत्य	13
एक दिन	14
सपने	15
पाना न कहते	17
अंधकार की बाधा	19
मेरी वसुंधरा मेरा आकाश	21
जीवन- युद्ध की आस्था	23
परिधि और बिंदु	25
किसलिए यह दोनों....	26
तुम प्रतिकर करो	27
उन क्षणों की याद	29
प्रतिबद्ध दिन	31
लय और छन्द	33
मैं तट पर बैठी रही	35
कोई वरद क्षण	37
कृतज्ञता	39
कमरे की कैद हवा	41
मेरे बावजूद	42
सांझी सांसारिकता	43

धुरी का कौशल 44

इतिहास की विकृतियों के शिकार 45

माँ 47

जीवन- दर्शन की भाषा 48

उसी स्मरण की छाँह 49

...हवा में ताने हथियार 51

देहरी का लाँघना 52

तुम्हारे झड़ जाने.... 53

क्यों मेरी परिधि! 54

अचेतन 56

नियति 57

तुम्हारे भीतर उतरने का उत्सव 58

वह वैराग्य- मरु 60

मृत्यु के जन्म पर 61

परोसने की प्रभुता 62

पुत्र सुख के नाम पर... 63

उर्वरता बन बहने को 64

तुम्हें शिव! 65

ऊबे हुए लोग 66

आधे- अधूरे शौदाई 68

उसके देने ने दिया 69

यह कैसी ज़िद 71

सदी के नामांकन के लिए 73

....कुछ भी नहीं दीखा 75

उतना ही क्लांत 76

काठ हुई पड़ी हो 79

अचम्भा 80

सदी की समझ 81

उपास्या लिए थी जो वस्तु 83

...दोनों आगे जाते हैं 85

आम आदमी 86

किताबों का ढेर 87

अभी कुछ और होना है… 88

अविराम 89

माँ ने कहा.... 90

समय का इतिहास 93

अन्तराल 95

गारत के समय 97

जिन्हें सौंपना था भविष्य 99

समय की नदी 100

इच्छा के ओढ़न का सवाल 102

अँसुवाया मन 103

तुम्हारे होने से 105

तुम कहीं भी जाओ 107

पटाक्षेप 108

मेरी संचरना के कोष 109

द्वन्द्व निवारण 111

विडम्बना 112

ख़बर 113

जंगल के हक़ में 114

सबकी धरती 115

शब्दों की हाट में 116

निःशब्द रात

कामों से लदी निःशब्द रात

घर के किसी दूसरे कोने में जाग रही घनघोर प्यास

दो अनझिप टकटकियाँ

पर दोनों ही छोर चुप हैं

अपने में बंद

अपरिचित

कौन कह सकता है प्यास अगर माँग लेती

तो मिल ही जाता

जिसकी चाह थी

याकि सृजन का कौशल

फल देगा ही

निष्काम की दीक्षा वाले देश में

दो गुम छोरों के अतिरिक्त भी

पास कहीं सतत

नश्वरता की नदी